IOSR Journal of Humanities And Social Science (IOSR-JHSS)
Volume 26, Issue 1, Series 7 (January. 2021) 24-29
e-ISSN: 2279-0837, p-ISSN: 2279-0845.
www.iosrjournals.org

भौगोलिक विचारधारा में प्रतिमान विकास एंव परिर्वतन कि अवस्थाः—एक ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य

दीनानाथ ठाकुर, षोधार्थी,
यूजीसी और एनटीए नेट, स्नातकोत्तर भूगोल विभाग,
विनोबा भावे विष्वविद्यालय हजारीबाग, झारखंड, 825301

सारांष
वर्त्तमान समय में प्रतिमान कि अवस्था प्राचीन एंव भूतकाल के भौगोलिक विचारधारा का परिणाम है। प्रस्तुत शोध पत्र में भूगोल में प्रतिमान बदलाव के विषय पर चर्चा कि गई है। इसमे यह बतलाने कि कोशिश कि गई है कि सभी विषयों कि भाँति भूगोल का अपना प्रतिमान या विचारधारा है। यह विचारधारा तथा चिन्तनफलक ही इस विषय को 1859 ई0 से आज तक आगे बढ़ाते आया है। इस षोध पत्र मे विषय के रूप विशलेषणात्मक—सह —वर्णनात्मक पद्धति का उपयोग किया गया है। साक्ष्य विषय के ऐतिहासिक विश्लेषण पर उपलब्ध है। इस विधि तंत्र के माध्यम से विषय को वैज्ञानिक बनाने का कोशिश किया गया है क्योंकि विषय बौद्धिक चितंन पर आधारित है जो उदेश्यों के आधार पर चितंन बन जाता है। इस शोध मे यह जानने का प्रयास किया गया है कि भूगोल मे प्रतिमान कि अवस्था का प्रारंभ कैसे हुआ है जो आज से 1859 ई0 मे डार्विन के विकास प्रक्रिया से माना जाता है परंतु भूगोल का आज प्रतिमान कल्याण परक हो चुका है यह मानव की समाजिक आर्थिक बातों पर ध्यान दे रहा है। अतः कहा जा सकता है कि भूगोल का प्रतिमान बदल रहा है।
मुख्य बिंदु :— प्रतिमान, प्रतिमान विकास एंव परिवत्तन, तत्व मींमासा, भौगोलिक विचारधारा, मानव कल्याण।

Date of Submission: 05-01-2021 Date of Acceptance: 20-01-2021

प्रस्तावना

प्रतिमान में विषेष तौर पर विषय कि ऐतिहासिक चरित्र का उल्लेख करता है। यह भूगोलवेत्ताओं कि चिंतन का परिणाम है। प्रतिमान या चिन्तनफलक एक "शब्द" है जिनमें लोगों के सोच को बदलने की ताकत होती है प्रतिमान कहलाता है। प्रतिमान एक " मान्यता " है जो लोगों के देखने का नजरिया बदल दे। यह एक विचारधारा एवं संकल्पना है जो विचार को बदलने की क्षमता रखता है, प्रतिमान व चिन्तनफलक कहलाता है। पैराडाइम शब्द ग्रीक और लैटिन भाषा कि देन है। इसका उपयोग 15 वीं शताब्दी से है। ग्रीक भाषा के "Para " का अर्थ " बगल मे" और " Dennyai " का अर्थ प्रदर्शित करने के लिए। मूल रूप से प्रतिमान (Paradigms) का उपयोग लैटिन भाषा में एक मॉडल या प्रतिरूप को संदर्भित करने के लिए किया गया था। जो आज भी औपचारिक अर्थो में है। विज्ञान की सभी विषयो के लिए प्रतिमान या चिन्तफलक कि आवश्यकता होती है। यह प्रतिमान विज्ञान को वैज्ञानिक और क्रमबद्ध बनाता है। यह चिन्तफलक मूल रूप से मानवीय विचारों कि अभिव्यक्ति है।

इसी सदंर्भ में प्रसिद्ध अमेरिकी विद्वान थॉमस एस कून (Thomas.S Kuhn) जिसका भौतिकी मे अहम योगदान है, उन्होंने 1962 में "The Structure of scientific Revolutions" में विज्ञानों के विकास का सिद्धांत Paradigms या चिन्तन फलक प्रस्तुत किया। पुनः इस पुस्तक का 1970 में प्रकाशन किया गया। प्रतिमान मानव मस्तिष्क का आदर्श विचार है। साथ ही यह मानव समाज में स्थापित विचार है। यह एक स्थापित संकल्पना है। समय और स्थान के साथ यह प्रतिमान निरंतर बदलती रहती है। यह प्रतिमान भूगोल ही नहीं बल्कि उन सभी विषयों में महत्वपूर्ण है जिसमें हमेषा से बड़ा परिर्वतन होता रहा है। आज हम जिस नजरिये से विषय को देखते हैं। उसे जो मायने देना चाहते हैं वही हमारा प्रतिमान ळें

"प्रतिमान मान्यताओं, मूल्यों, तकनीकों का पूरा राशि है और इसलिए किसी दिए गए समुदाय के सदस्य द्वारा साझा किया जाता है।" (कुहन, 1970, पृ० 175)

APPROACH TO GEOSPACE	REGARD OF GEOSPACE	PARADIGM	METHODOLOGY	APPROACH TO METHODS
MONO DISCIPLINARY	FRAGMENTED	TRADITIONAL	QUALITATIVE / QUANTITATIVE	TRADITIONAL
MULTI DISCIPLINARY	SUSTAINABLE	GEO INFORMATICS	INFORMATICS	COMPUTER TECHNOLOGY
INTER DISCIPLINARY	INEGRATED	CHORO INFORMATICS	HOLISTIC	INTEGRATION

अतः यही दर्शन प्रतिमान है। प्रतिमान एक स्थापित अवधारणा या विश्वास का या कार्यप्रणाली का मूल्य है। कोई भी विषय प्रतिमान के बिना मौजूद नहीं है। जब एक प्रतिमान जटिलताओं का शिकार हो जाता है या मानवता के लिए असहज हो जाता है तो उस प्रतिमान को बदल देता है और दुसरा प्रतिमान स्थापित हो जाता है। ऐसे पुराने प्रतिमान को नए द्वारा बदलने को प्रतिमान बदलाव कहा जाता है।

प्रतिमान व चिन्तनफलक किसी विज्ञान के इतिहास में वह सापेक्षिक शांत समय–अवधि होती है जब विषय के वैज्ञानिकों को सामान्य स्वीकृति वाली अनुसंधान समस्याएँ, विधि तंत्र एवं समाधान उपलब्ध होते हैं। (कौशिक एवं रावत, 2016, पृष्ठ 203)।

गोलेज व अमादी ने एक रोचक बात यह कही कि " नियम" की कोई एक मात्र स्वीकार बनी परिभाषा नहीं है। उन्होंने जोर दिया कि सम्भावित–नियम, अनुप्रस्थ काट नियम, समस्थितक नियम, ऐतिहासिक नियम, विकास–नियम, सांख्यिकी नियम, गणितीय नियम इत्यादि अनेक नियमों की स्थापना होती है। (हुसैन, 2011, पृष्ठ 260)

भूगोल एक वैज्ञानिक विषय है। इनमें भी निरंतर प्रतिमान का विकास होता गया है। लेकिन इनके प्रतिमान को लेकर हमेशा से हीं संशय बना है। कुछ विद्धानों का मत था कि 1820 ई० में विश्व स्तर पर भूगोल के पहले प्रोफेसर कार्ल रिटर का बर्लिन विश्वविद्यालय में नियुक्ति से पैराडाइम का विकास हुआ। लेकिन चार्ल्स डार्विन के Origin of Species का प्रकाशन 1859 में तथा हम्बोलट का देहांत भी प्रमुख आधार रहा है।

अमेरिकी भौतिक वैज्ञानिक थॉमस एस. कुन (Thomas.S Kuhn) विज्ञानों का इतिहासकार हैं, इन्होंने The Structure of scientific Revolutions, 1962,1970 में विज्ञानों के विकास का सिद्धान्त प्रस्तुत किया । कुन ने बताया कि विज्ञान का निरंतर और नियमित रूप से विकसित नहीं होते वरन् यह पैराडाइम और क्राइसिस (Crisis) से होकर गुजरता है। कुन (Kuhn) ने कहा कि विज्ञान कोई अच्छी प्रकार नियमित बनी प्रक्रिया नहीं है जिसके परिणामों को प्रत्येक पीढ़ी स्वचालित होकर अपनाती चली गई।

कुन ने एक मॉडल **"विज्ञान का प्रतिमान"** रचा। वह कहता है – " प्रतिमान ऐसा मॉडल है जो काल विशेष में सर्वव्यापी बनी सर्वमान्य वैज्ञानिक उपलब्धि है। वह अभ्यासी समुदाय के लिए समस्याएँ व हल प्रदान करता है (हुसैन, 2011, पृष्ठ 262)

कुन ने अपने पैराडाइम के सिद्धान्त में किसी भी विज्ञान की प्रगति की 6 अवस्थाएँ (Phase) बताई हैं

I. पूर्व प्रतिमान।
II. व्यवसायिक दक्षता।
III. प्रतिमान अवस्था।
IV. समस्या समाधान अवस्था।
V. क्राइसिस अवस्था।
VI. क्रांतिकारी अवस्था।

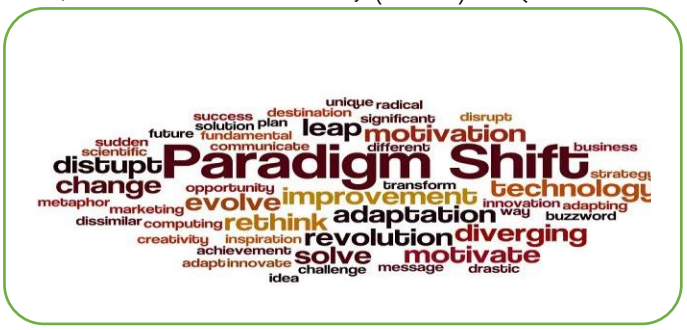

1. पूर्व प्रतिमान कि अवस्था में विज्ञान दार्शनिक विचारों के क्षेत्र से अधिक क्रमबद्ध अध्ययन अवस्था में आता है। विचारों में विविधता होती है तथा जानकारी का भारी संकलन होता रहता है। लेकिन विशेषीकरण का निम्न स्तर होता है।

2. व्यावसायिक दक्षता अवस्था में विषय सुपरिभाषित होता है तथा कोई एक विचारधारा अन्य से अधिक प्रखर हो जाती है। वैज्ञानिक अपने कार्य में अधिक दक्ष होते हैं।
3. प्रतिमान अवस्था में समस्या क्षेत्र स्पष्ट होता है तथा अधिकांश वैज्ञानिक इसके लिए सहमत होते हैं। यह प्रतिमान सामान्य विज्ञान बन जाता है।
4. इस समस्या समाधान अवस्था में विधितंत्र के स्थान पर अनुसंधान समस्या, प्रश्न सुलझाने के परिणामों का मूल्यांकन या सत्यापन होता है।
5. इस अवस्था में इतने प्रश्न एकत्रित हो जाते हैं जिनके उत्तर प्रचलित पैराडाइम में नहीं होते हैं। यह प्रतिमान नये पैराडाइम के स्थापना से समाप्त होता है।
6. क्रांतिकारी अवस्था नये पैराडाइम की स्वीकृति पर प्रारंभ होती है तथा पुरानी व्याख्या एवं विधि बदल जाती है।

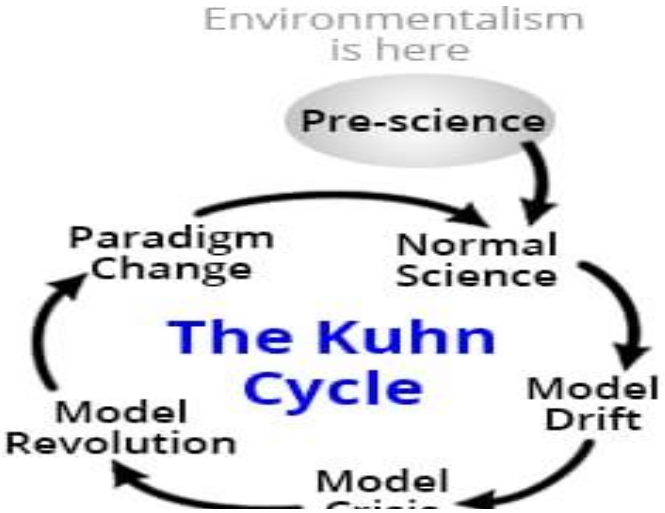

शोध का उद्देश्य

इस शोध का प्रमुख उद्देश्य इस प्रकार है :–
1. भूगोल की भौगोतिक विचारधारा को वैज्ञानिकता को प्रदान करना।
2. भूगोल में ऐतिहासिक प्रतिमानों के बारे में जानकारी हासिल करना।
3. प्रतिमान कि प्राचीन एंव भूतकाल के भौगोलिक विचारधारा का परिणाम ज्ञात करना।

शोध की विधि तंत्र

किसी भी शोध कार्य को पुरा करने के लिए विधि तंत्र की आवश्यकता होती है। विधि तंत्र के द्वारा हीं शोध को क्रमबद्ध विश्लेषणात्मक एवं वैज्ञानिक बनाया जा सकता है। इस शोध पत्र के लिए वर्णनात्मक सह–विश्लेषणात्मक विधि का प्रयोग किया गया है। साथ हि ऐतिहासिक अनुसंधान विधि का प्रयोग किया गया। जिसका विभिन्न समकालिक सर्वेक्षण में प्रतिमान की विकास और ऐतिहासिक साक्ष्य में उपलब्ध है।

कुहन का प्रतिमान

इस शोध पत्र के अध्ययन का उद्देश्य भूगोल की वैज्ञानिकता को प्रमाणित करना है जो कि इसकी अपनी एक परिभाषा एवं विधि तंत्र है। ऐसा माना जाता है, कि भूगोल में चिंतनफलक का शुरूआत 1859 से हुआ है। कूहन का पैराडाइम (प्रतिमान) किसी विज्ञान के विकास को समझने के लिए एक उपयोगी ढाँचा देता है। यद्यपि पूर्ण व्याख्या में सफल नहीं है। कून की शिक्षा भौतिकी में हुई थी तथा यह सिद्धांत भौतिकी के विकास पर आधारित है। (Hold-Jenson 1981; 39-43)

कून के सिद्धांत के अनुरूप भूगोल के चिन्तनफलक (Paradigms in Geography in conformity with Kuhn's Theory) :–गुनार हैनरिकसन (नार्वे) ने Metageographic Analysis, 1973 में कून के विज्ञान के विकास के सिद्धांत का भौगोलिक व्याख्या प्रस्तुत किया। इसे आधार बनाकर भूगोल के चिंतनफलकों का क्रमबद्ध इतिहास वर्त्तमान समय तक बताया जा सकता है।

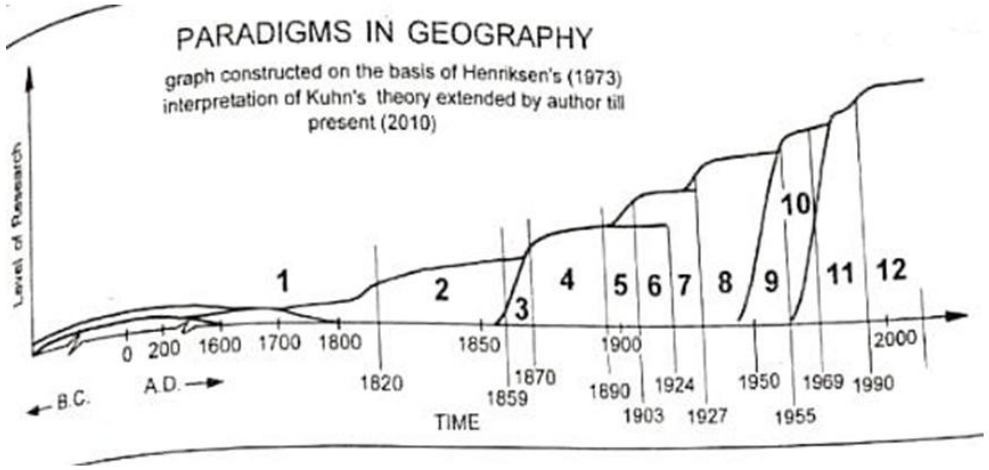

गुनार हेनरिकसन मॉडल 1973

1. पूर्व पैराडाइम। (1820 से पूर्व)
2. व्यवसायिकरण। (1820–1859)
3. क्राइसिस (आमूल परिवर्तन के साथ)। (1859–1870)
4. भूआकृति विज्ञान/निश्चयवाद पैराडाइम। (1870–1924)
5. क्राइसिस।(1891–1903)
6. फ्रांसीसी प्रादेशिक भूगोल/ सम्भवाद पैराडाइम। (1903–1927)
7. क्राइसिस। (1927–1930)
8. क्षेत्रीय विभेदन/ प्रदेश पैराडाइम। (1930–1945)
9. क्राइसिस (आमूल परिवर्तन के साथ)। (1945–1953)
10. सैद्धांतिक भूगोल प्रतिमान। (1955–1969)
11. क्राइसिस एवं मानव तथा मूल्यों की और उन्मुख भूगोल तथा क्रिटिकल क्रांति। (1973–1989)
12. क्राइसिस तथा उत्तर आधुनिक भूगोल। (1990 वर्तमान)

<u>विवेचना एंव परिणाम (भौगोलिक प्रतिमानः– एक ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य)</u>

भूगोल की प्रतिमान का विकास उस काल में भी था जब विश्व पटल पर " भूगोल विषय" नहीं था ऐसे तो यह मान्यता है कि यूनान की विभिन्न प्राकृतिक आकृतियों व कटी–फटी तटरेखाओं के बीच भौतिक भूगोल पनपा। लेकिन एक विषय के रूप में इसका प्रारंभ लगभग 2350 वर्ष पूर्व पुराना है। जब ग्रीक विद्वान इरेटोस्थनीज ने Geographie नाम रखा था। लेकिन इस विषय का वैज्ञानिक प्रतिमान 1650 ई. से वारेनियस के कार्य से हीं प्रारंभ हुआ।

यदि हम स्पष्ट रूप से व्याख्या करें कि भूगोल के प्रतिमान के रूपरेखा में किस तरह बदलाव आया तो निम्न रूप से देख सकते हैं :–

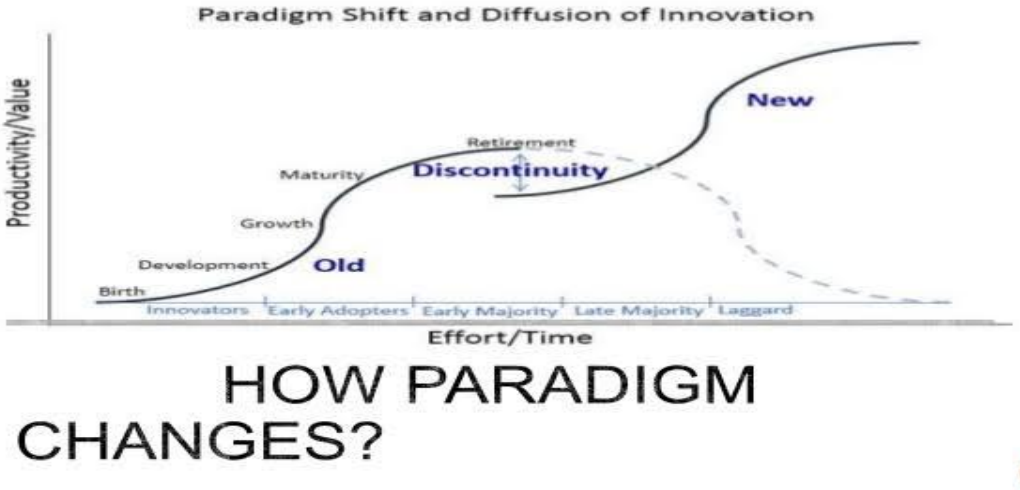

प्रतिमान का अवस्थापन/ स्थानांतरण

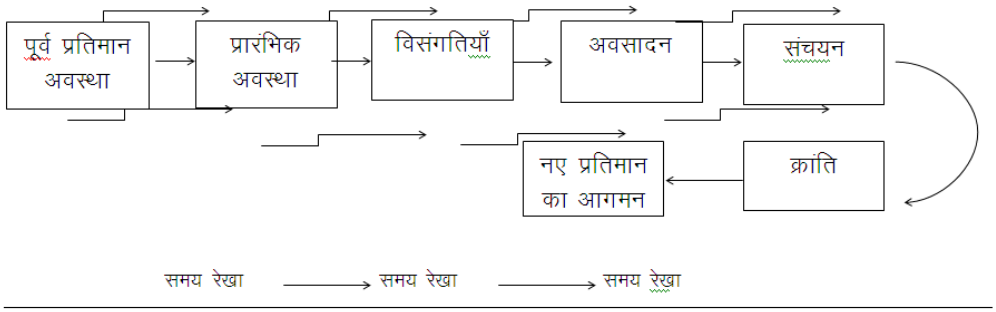

Source :- http://youtu.be/zd-gG4kTyZg

इस चार्ट में यह दर्शाया गया है कि पूर्व प्रतिमान अवस्था में कोई भी पैराडाइम या प्रतिमान विकास नहीं करता है। इसके उपरांत धीरे–धीरे व्यवहार और विषय कि प्रकृति के कारण एवं अनुसंधान के कारण कुछ न कुछ प्रतिमान बनते हैं तो उसे प्रारंभिक प्रतिमान अवस्था कहलाता है।

इस प्रारंभिक अवस्था के प्रतिमान में समय बीतते जाते हैं तो उसमें विसंगतियाँ उत्पन्न होती है। और उन विसंगतियों के कारण उनका अवसादन एवं जमाव होता है। यही जमाव जब एक स्थान एवं काल विशेष पर संगठित हो जाते हैं तो संचयन कहलाता है। इन संचयन के परिणामस्वरूप क्रांति का जन्म होता है तथा पुराने पैराडाइम के स्थान पर नए प्रतिमान का आगमन होता है।

जब हम भूगोल के पटल पर प्रतिमान को देखते हैं तो उसको मूल रूप से दो भाग में बाँटते हैं :–

1. परम्परागत प्रतिमान ।

2. समसामयिक प्रतिमान ।

परम्परागत प्रतिमान	समसामयिक प्रतिमान
1. सोद्देश्य वर्णनात्मक प्रतिमान	1. प्रत्यक्षवादी प्रतिमान
2. छायावादी प्रतिमान	2. मात्रात्मक प्रतिमान
3. पर्यावरणवादी प्रतिमान	3. व्यवहारपरक प्रतिमान
4. संभववादी प्रतिमान	4. मानवतावादी प्रतिमान
5. क्षेत्रविवरणी प्रतिमान	5. क्रांतिपरक या मार्क्सवादी प्रतिमान
	6. कल्याणपरक प्रतिमान

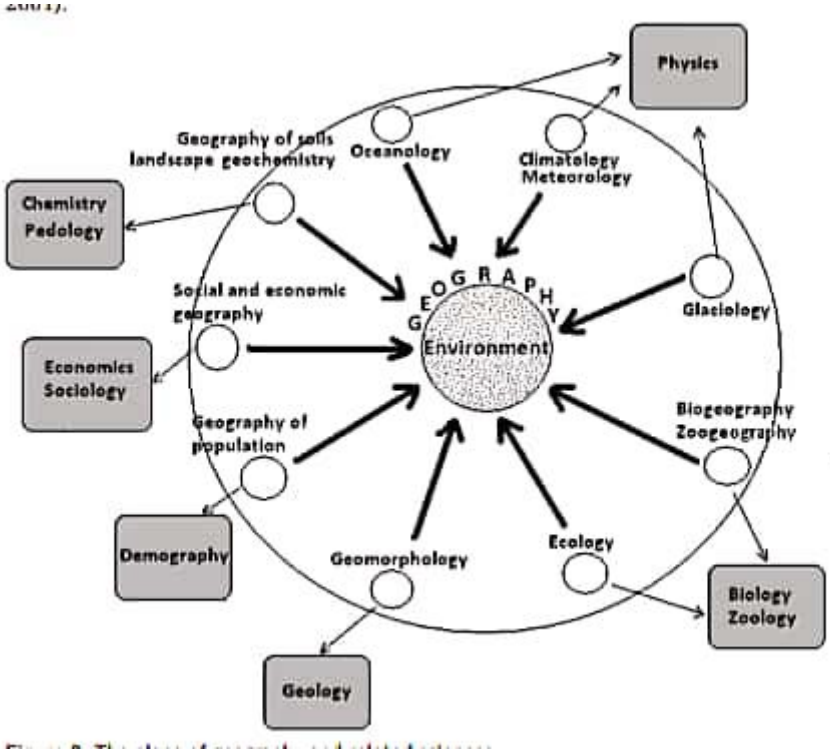

जब हम भूगोल का प्रारंभिक भाग के प्रतिमान पर दृष्टि डालते हैं तो यह सोद्देश्य एवं वर्णानात्मक प्रतीत होता है। 624 बीसी में **थेल्स** ने भूगोल शब्द का प्रयोग किए बिना हीं सर्वप्रथम क्रमबद्ध अध्ययन किया। इसी प्रकार **हेरोडोट्स** (426–485 बी.सी) ने कहा था कि " मिश्र नील नदी की देन है।" इसी प्रकार **प्लेटो**(428 बी.सी), **अरस्तु** (384 बी.सी) **इरेस्टोस्थनीज** (276 बी.सी.), **स्ट्रेबो** (20 ए.डी.) **टॉलेमी** (90ए.डी.) सभी ने वर्णनात्मक भूगोल के बारे में उल्लेख किए हैं। इन्होंने इसी समय में एक प्रतिमान माना कि साहित्य के आधार पर भूगोल का वर्णन हो सकता है। इन्हीं के उपरान्त भूगोल में अंधकार युग का काल आता है जिसमें भूगोल के पटल पर कुछ विकास नहीं हो रहा था। क्योंकि इस समय रोमन कैथोलिक का बोलबाला था। इसी काल में अरब भूगोलवेत्ताओं ने कुछ महत्वपूर्ण कार्य किए थे। जैसे– **इब्न बतूता, इदरिसी, खल्दून, इब्न सिने,** इत्यादि। इन्हीं के उपरांत (लगभग 1400 ई०) पुर्नजागरण का काल प्रारंभ होता है। परन्तु इस विषय का वैज्ञानिक स्वरूप 1650 से वारेनियेस के कार्य से प्रारंभ हुआ। पुर्नजागरण काल में हीं 1500 ई. में मैगलन ने पृथ्वी के आकार के संदर्भ में प्रतिमान गोल बताया।

मूलरूप से छायावादी प्रतिमान हम्बोल्ट (1790) एवं रिटर (1779) का माना जाता है। इसी अवधी में हम्बोल्ट ने जर्मनी से पुर्तगाल, ओरोनिको नदी के बेसिन, पेरू–अमेरिका होते हुए पुनः जर्मनी लौटे एवं यूराल पर्वत पर कोयले को खोजा ओर अपनी पुस्तक **"Cosmos"** में **"Unity of Nature"** कि बात कही। इसी प्रकार रिटर ने **"Erdkunde"** में पृथ्वी की सतह का वर्णन एवं प्रादेशिक तत्वों का वर्णन किया एवं भूगोल के प्रतिमान को ही बदल कर रख दिया। पर्यावरणीय प्रतिमान में विद्वानों ने पर्यावरण के प्रति आस्था प्रकट की एवं पर्यावरण की महत्ता को स्वीकारा। **चार्ल्स डार्विन** ने 1859 ई. में अपनी ग्रंथ **"Origin of Species"** पर नए प्रतिमान का आर्विभाव हुआ की समाज में वहीं अपनी जगह ग्रहण कर सकता है जो मूल बैठता हो। इसी प्रकार रैटजेल, वान रिचेथोफेन, ऐलेन चर्चिल सेम्पल, हटिंगटन आदि सभी ने पर्यावरण की महत्ता को स्वीकारा। इसी संदर्भ में 1911 ई. में कुमारी ऐलेन सेम्पुल ने **"Influence of Geographic Environment"** में कहा कि " मानव पृथ्वी तल का उपज है "। इसे निश्चयवादी प्रतिमान कहा जाता है।

विडाल–डी–लॉ–ब्लॉश ने निश्चयवादी प्रतिमान का घोर विरोध किया और कहा कि मानव प्रकृति से सर्वोपरी है और मानव अपनी आवश्यकता के अनुसार पर्यावरण को बदल सकता है। इन्होंने यह कहा कि " मानव प्रकृति का दास नहीं, बल्कि उसका स्वामी है "। ब्लाश के समर्थक के रूप में ब्रुन्स, डिमांजिया, डी मोतार्नी, बेरोज, ईसा बोमैन आदि थे। बैरोज ने तो मानव स्वामी को लेकर **मानव पारिस्थितिकी** की संकल्पना दी। जब 1939 ई. में **रिचर्ड हार्टशोर्न** ने **"Nature of Geography"** नामक पुस्तक में " क्षेत्रीय विभिन्नता की बात कही तो पुनः एक नया पैराडाइम का उदय हुआ जिसे क्षेत्र वर्णनीय प्रतिमान कहा गया। द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद भूगोल के प्रतिमान में बदलाव आने लगे तो उसे **समसामयिक प्रतिमान** कहा गया। **ऑगस्ट कॉम्टे** ने 1920 ई. में प्रत्यक्षवादी प्रतिमान में कहा की **" वास्तविक ज्ञान हमेशा वैज्ञानिक होता है।"** इसी प्रत्यक्षवादी प्रतिमान को आधार मानकर मात्रात्मक प्रतिमान का विकास हुआ। **पीटर हैगेट एवं चार्ले** ने तो इसके संदर्भ में **"Models in Geography "** नामक पुस्तक लिखी। इन मात्रात्मक प्रतिमान के समर्थक जे. एल बैरी, गैरीसन, चार्ले, गैगरी आदि इन्होंने भूगोल के प्रतिमान को मॉडल, गणित के आधार पर मात्रात्मक करने लगे। इन्हीं के उपरांत 1963 ई. में **विलियम किर्क** ने "व्यवहारवादी प्रतिमान" का विकास किया और मानव और पर्यावरण के बीच व्यवहारिक तथ्यों के बारे में अध्ययन किया। यहाँ तक की वर्तमान परिदृश्य में भूगोल का प्रतिमान कल्याणकारी प्रतिमान है जो मानव कल्याण की बातें करता है।

निष्कर्ष

उपरोक्त सभी विवेचनाओं से स्पष्ट होता है कि यह शोध वैज्ञानिक भूगोल की विषय वस्तु को स्पष्ट करती है तथा स्पष्ट रूप से परम्परागत और समसामयिक घटनाओं को इंगित करती है। साथ हीं यह नए प्रतिमान स्थापित करती है। सन् 1990 के दशक से हीं भूमण्डलीय प्रादेशिक एवं स्थानीय बिगड़ती पर्यावरणीय दशायें संसाधन संकट तथा मानव अस्तित्व के सरोकारों से मानव–पर्यावरण संबंध के नए दृष्टिकोण विकसित हो रहे हैं।

संदर्भ ग्रंथ

- हुसैन, माजिद (2011) : भूगोल में प्रतिमान 'भौगोलिक चिंतन का इतिहास" , जयपुर, रावत पब्लिकेशन्स।
- कौशिक & रावत (2016) : " भौगोलिक विचारधाराएँ एवं विधितंत्र ", मेरठ, रस्तोगी प्रकाशन।
- Adhikari,S (1998): Fundamantal of Geographical Thought, Allahabad ,Chaitanya Publishing House.
- Changing Paradigms of Geography//kostis'C . koutsopoulos.
- Paradigmatic Shift in Geographical Thought//Dr. Lalita Rana
- https:// images.app.goo.gl/ijkofp^{3}nztzoHdk38
- https:// images. app. goo.gl/8pcxwn4dDstrBpbwA
- https:// images. app. goo.gl/SMDXXDunLBws6v2B9
- https://www.thoughteo.com/what is a paradigm-shift-2670671
- https://www.youarticlelibrary.com/geography/geographical-paradisms-a-historical-perspective-with graphs/24619
- https:// images. app. goo.gl/GTg3oR8kafw97spi
- https:// images. app. goo.gl/UgBQDYiLQErmCKPS7
- http://youtu.be/zd-gG4kTyZg